TITLE CODE - UPMUL00778

केसरिया स्वर

वर्ष– 01 : अंक–02 लखनऊ, 16 अक्टूबर से 31 अक्टूबर, 2022 (हिन्दी पाक्षिक) पृष्ठ : 8 मूल्य : 3 रूपये

पाकिस्तान सबसे खतरनाक देशों में एक है: जोबिडेन

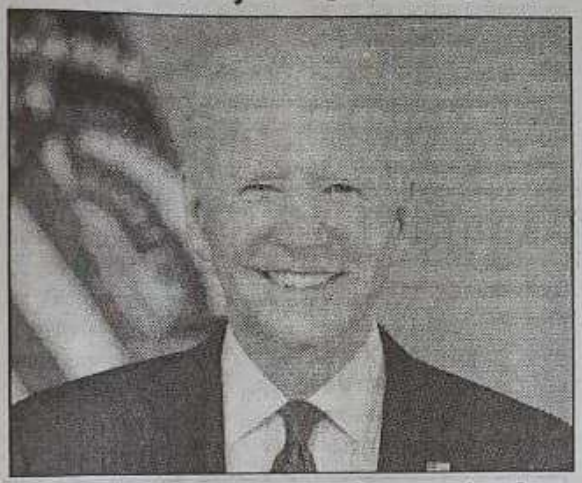

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन ने परमाणु हथियार सम्पन्न देश पाकिस्तान को सबसे खतरनाक देश बताकर चिन्ता जाहिर की। लासएंजिल्स में डेमोक्रेटिक पार्टी के सांसदो के लिए प्रचार करते हुए जो बिडेन ने कहा कि विश्व शान्ति के समक्ष उठ रहे खतरे की चुनौती में पाकिस्तान भी खतरनाक स्थितियों के निर्माण की तरफ अग्रसर है। उन्होने कहा कि पाकिस्तान में परमाणु हथियार है और वहाँ कोई कोई सामंजस्य भी नहीं है। हालांकि पाकिस्तान पर ऐसा बयान देकर अमेरिका स्वयं भी कटघरे में खड़ा होता है, क्योंकि पाकिस्तान को खतरनाक हथियारों की खेप अमेरिका ही उपलब्ध कराता रहा है।

एक लाख के इनामी निलंबित आई. पी.एस. अधिकारी ने किया आत्मसमर्पण

महोबा के क्रशर व्यापारी इंद्रकांत की मौत के मामले में वांछित आई. पी.एस. अधिकारी मणि लाल पाटीदार ने 15 अक्टूबर को न्यायालय के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया। उक्त प्रकरण में कबरई के बर्खास्त थाना प्रभारी देवेंद्र कुमार शुक्ला सिपाही अरूण यादव, सुरेश सोनी एवं ब्रह्मदत्त तिवारी पहले से ही जेल में निरूद्ध है। मृतक इंद्रकांत के भाई रविकांत ने सितम्बर 2020 में इस मामले की एफ.आई.आर. थाना कबरई महोबा में दर्ज कराई थी। मृतक से अभियुक्तगण डकैतों से भी अधिक क्रूरता पूर्वक लाखों की वसूली प्रतिमाह करते थे। भारतीय पुलिस अपने नागरिकों के साथ ऐसा क्रूरतम व्यवहार करेगी, शायद स्वतत्रता सेनानियों ने इसकी कल्पना भी नहीं की होगी।

एक और कश्मीरी हिन्दू की उनके घर के बाहर गोली मारकर हत्या

श्रीनगर शोपियाँ श्रीनगर में कश्मीरी हिन्दू की उनके घर के बाहर गोली मारकर हत्या कर दी। कश्मीरी हिन्दू पूर्ण कृष्ण भट्ट की हत्या की जिम्मेदारी, अलबदर हिजबुल मुजाहिद्दीन के सहयोगी संगठन ने ली है। जिसके विरोध में जम्मू और कश्मीर के विभिन्न हिस्सों में विरोध प्रदर्शन हो रहे है। आश्चर्य की बात है कि एवार्ड वापसी गैंग के किसी भी तथाकथित व्यक्ति ने इसकी निंदा नहीं की।

डॉ. दिनेश शर्मा ने किया केसरिया स्वर पाक्षिक का भव्य लोकार्पण

जनपद न्यायालय प्रांगण लखनऊ स्थित सेंट्रल बार एसोसिएशन के डा. राजेन्द्र प्रसाद सभागार में मुख्य अतिथि डा.दिनेश शर्मा ने किया केसरिया स्वर का लोकार्पण। अधिवक्ता गणों की भारी उपस्थिति में कार्यक्रम की अध्यक्षता सेंट्रल बार एसोसिएशन के अध्यक्ष सुनील कुमार द्विवेदी ने किया, मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व उप मुख्यमंत्री डॉ दिनेश शर्मा जी के साथ विशिष्ट अतिथि गणों के रूप में लखनऊ बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अधिवक्ता सुरेश पांडे, महामंत्री कुलदीप नारायण मिश्र, उत्तर प्रदेश बार काउंसिल के सह अध्यक्ष जय नारायण पाण्डेय, अधिवक्ता रमेश प्रसाद तिवारी, अधिवक्ता एस पी उपाध्याय, अधिवक्ता अरुण श्रीवास्तव द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। वाणी वंदना के पश्चात डॉ दिनेश शर्मा को पुष्प गुच्छ प्रदान कर उनका स्वागत केसरिया स्वर की प्रधान संपादिका शरद सिंह शरद ने किया।

केसरिया स्वर का भव्य लोकार्पण करने के पश्चात सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ दिनेश शर्मा ने कहा कि, अधिवक्ता गणों एवं साहित्यकार मनीषियों द्वारा प्रकाशित हो रहे केसरिया स्वर से समाज को रचनात्मक मार्गदर्शन प्राप्त हो, इसके लिए कानून से संबंधित लेखों के साथ साथ राष्ट्र जागरण तथा जन जागरण का साहित्य भी केसरिया स्वर को प्रकाशित करना होगा। डॉ दिनेश शर्मा ने जनपद न्यायालय प्रांगण लखनऊ में अधिवक्ताओं एवं वादकारियों की सुविधा के लिए हर संभव मदद के प्रयास का आश्वासन भी दिया तथा अपनी विधायक निधि से जनपद न्यायालय प्रांगण में नये कार्य कराने का प्रस्ताव भी मांगा। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच डा. दिनेश शर्मा के संबोधन के पश्चात अधिवक्ता सुरेश पांडे एवं कुलदीप नारायण मिश्र ने भी सभा को संबोधित किया अध्यक्ष सुनील कुमार द्विवेदी के संबोधन के पश्चात बुजुर्ग अधिवक्ता अरुण कुमार श्रीवास्तव ने भी केसरिया स्वर के प्रकाशन पर अपने प्रसन्नता पूर्ण उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन संपादक केसरिया स्वर शरद मिश्र सिंधु अधिवक्ता ने किया।

सम्पादकीय

हिन्दी में डाक्टरी की पढ़ाई और हिन्दी संस्थान

संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक भारत संघ की राजभाषा हिन्दी के लिए संविधान निर्माताओं ने स्पष्ट प्राविधान किया, किन्तु आजादी के बाद हिंदी को वह सम्मान सरकारों ने नहीं दिया जो जन सामान्य ने उसे दिया। हालाँकि जनमानस ने हिन्दी को विश्व की सर्वाधिक स्वीकार्य भाषाओं में से एक बना दिया, जिसका हिन्दी ने कभी आग्रह नहीं किया, लेकिन सवा सौ करोड़ की भारतीय आबादी हिन्दी को सिर माथे बैठाए रही। दूसरी तरफ अंग्रेजी के थोपे जाने के सरकारी दुराग्रह ने मातृभाषा की मेधा को रोकने में भी महती भूमिका निभाई, फिर भी शनैः शनैः हिन्दी अपने लक्ष्य की ओर गतिमान रही, परिणाम स्वरूप मध्य प्रदेश में डाक्टरी की पढ़ाई में हिन्दी भाषा लागू कर दी गई। हिन्दी की प्रतीक्षा अभी सर्वोच्च न्यायालय की न्याय भावना बेतरतीबी से कर रही है, सर्वोच्च न्यायालय में भी अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी स्वीकार्य हो सकती है, जो कि संविधान निर्मातओं और संविधान की मूल भावना के अनुसरण में ही होगा, जो कि स्पष्ट रूप से अनुच्छेद 351 में उद्घाटित भी है। समस्त देशवासियों को आज चिकित्सा क्षेत्र में मध्य प्रदेश में हिन्दी की पढ़ाई प्रारम्भ करने की प्रसन्नता तो अवश्य है, किन्तु देश भर में स्थान–स्थान पर बने हिन्दी संस्थान हिन्दी के लिए नासूर ही बनते जा रहे हैं। उ0प्र0 हिन्दी संस्थान के अधिकाँश समागार वर्षों से बन्द करा दिए गए हैं, और लाखों रुपए के व्यय वाला बड़ा समागार ही चालायमान रखा गया है, जबकि वर्षों पूर्व हिन्दी संस्थान में मात्र एक ही समागार था तब भी वह साहित्यिक गतिविधियों के लिए निःशुल्क था,, किन्तु आज चार–चार समागार हैं किन्तु उनमे से कोई एक भी समागार साहित्यिक गतिविधियों के लिए निःशुल्क नहीं है, और छोटे समागार तो हिन्दी द्रोही पदाधिकारियों ने बन्द ही करा रखे हैं, यही लोग युग के आदमगोण्डवी और लवकुश दीक्षित जैसे रचनाकारों के जीवन के दुरूह बना देते हैं। हिन्दी द्रोही ही हिन्दी संस्थानो में अपनी राजनैतिक पैठ बनाकर कैसे स्थान पा जाते हैं, इस पर हिन्दी सेवियों को ध्यान देना होगा। उ0प्र0 हिन्दी संस्थान को भ्रष्टाचार और हिन्दी द्रोहियों से भी मुक्त कराने का आंदोलन आवश्यक जान पड़ता है। हालाँकि तमाम सरकारी सेवाओं के रिटायर्ड बाबुओं की गिद्ध दृष्टि हिन्दी संस्थान के मलाईदार पदों पर हमेशा टिकी रहती है।

विज्ञापन/सहयोगी की दरें 'केसरिया स्वर'

पिछला पृष्ठ संपूर्ण– आजीवन रू. बीस लाख
पिछला पृष्ठ संपूर्ण पांच वर्षों के लिए रू. पांच लाख
अंदर का एक पृष्ठ संपूर्ण– आजीवन रू. दस लाख
अंदर का एक पृष्ठ संपूर्ण पांच वर्षों के लिए रू. पांच लाख
पिछला संपूर्ण पृष्ठ– एक अंक के लिए– रू. एक लाख
अंदर का एक पृष्ठ संपूर्ण– एक अंक के लिए रू. साठ हजार
नोट– छोटे आकार के विज्ञापन उसी अनुपात में देय, प्रवेशांक के प्रकाशन से दो माह कि विज्ञापन दरें उपरोक्त रहेंगी, उसके बाद दरों के बढोत्तरी संभाव्य है।
दान या सहयोग हेतु खाता सं. 'दिनकर दर्शन चैरिटेबल ट्रस्ट'
खाता संख्या– 536602010549552 IFSC Code-UBIN0553662
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, राजाजीपुरम शाखा, लखनऊ, उ.प्र.
फोन नं.–8960415670, 8423084196

आध्यात्मिक गुरु ओशो की कहानी

बहुत समय पहले की बात है गंगा नदी के किनारे पीपल का एक पेड़ था. पहाड़ों से उतरती गंगा पूरे वेग से बह रही थी कि अचानक पेड़ से दो पत्ते नदी में आ गिरे. एक पत्ता आड़ा गिरा और एक सीधा. जो आड़ा गिरा वह अड़ गया, कहने लगा, आज चाहे जो हो जाए मैं इस नदी को रोक कर ही रहूँगा–चाहे मेरी जान ही क्यों न चली जाए मैं इसे आगे नहीं बढ़ने दूंगा. वह जोर–जोर से चिल्लाने लगा – रुक जा गंगा !अब तू और आगे नहीं बढ़ सकती!मैं तुझे यहीं रोक दूंगा!

पर नदी तो बढ़ती ही जा रही थी उसे तो पता भी नहीं था कि कोई पत्ता उसे रोकने की कोशिश कर रहा है. पर पत्ते की तो जान पर बन आई थी..वो लगातार संघर्ष कर रहा था–नहीं जानता था कि बिना लड़े भी वहीं पहुंचेगा जहाँ लड़कर.. थककर.. हारकर पहुंचेगा! पर अब और तब के बीच का समय उसकी पीड़ा का उसके संताप का काल बन जाएगा.

वहीं दूसरा पत्ता जो सीधा गिरा था, वह तो नदी के प्रवाह के साथ ही बड़े मजे से बहता चला जा रहा था.

चल गंगा, आज मैं तुझे तेरे गंतव्य तक पहुंचा के ही दम लूँगा–चाहे जो हो जाए मैं तेरे मार्ग में कोई अवरोध नहीं आने दूंगा–तुझे सागर तक पहुंचा ही दूंगा. नदी को इस पत्ते का भी कुछ पता नहीं–वह तो अपनी ही धुन में सागर की ओर बढती जा रही है. पर पत्ता तो आनंदित है, वह तो यही समझ रहा है कि वही नदी को अपने साथ बहाए ले जा रहा है. आड़े पत्ते की तरह सीधा पत्ता भी नहीं जानता था कि चाहे वो नदी का साथ दे या नहीं नदी तो वहीं पहुंचेगी जहाँ उसे पहुंचना है! पर अब और तब के बीच का समय उसके सुख का, उसके आनंद का काल बन जाएगा.

जो पत्ता नदी से लड़ रहा है उससे रोक रहा है, उसकी जीत का कोई उपाय संभव नहीं है और जो पत्ता नदी को बहाए जा रहा है उसकी हार को कोई उपाय संभव नहीं है.

ओशो कहते हैं-

व्यक्ति ब्रह्मा की इच्छा के अतिरिक्त कुछ कभी कर नहीं पाता है, लेकिन लड़ सकता है, इतनी स्वतंत्रता है। और लड़कर अपने को चिंतित कर सकता है, इतनी स्वतंत्रता हैइतना फ्रीडम है। इस फ्रीडम का प्रयोग आप सर्वशक्तिमान की इच्छा से लड़ने में कर सकते हैं और तब जीवन उस आड़े पत्ते के जीवन की तरह दुःख और संताप के अलावा और कुछ नहीं होगा–या फिर आप उस फ्रीडम को ईश्वर के प्रति समर्पण बना सकते हैं और सीधे पत्ते की तरह आनंद विभोर हो सकते हैं.

संजय समर्थ

(लघुकथा) जुगाड़

चौराहे पर भीड़भाड़ है, वाहन अनुशासित रूप में गतिमान हैं। चौराहे के एक कोने में खड़े ट्रैफिक के दो सिपाही और एक दरोगा आपस में बात कर रहे है। दरोगा ने एक सिपाही से कहा, तुम लोग कुछ समझते नहीं, इस चौराहे का चालान रेट शहर में सबसे कम है, ऊपर से लताड़ पड़ती है कि इस चौराहे से चालान का जुर्माना जमा ही नहीं हो रहा है। तब तक 'दूसरा सिपाही बोल पड़ा और साहब चालान कैसे करें, यहाँ पढे लिखे लोगों का आना जाना है, सभी रेड लाईन के सिग्नल का पालन करते हैं, कोई बिना सिग्नल के आगे बढ़ता ही नही।' तब तक सारी बातें गौर से सुन रहा पहला सिपाही बोल उठा, 'अरे भाई देखिए मै। एक जुगाड़ करता हूँ और अभी समस्या का समाधान किए देता हूँ।' उसने होमगार्ड को बुलाया और उससे कुछ टिप्स लेकर जिधर लाल बत्ती थी उस छोर पर जाकर, होमगार्ड ने रेड सिग्नल होते हुए भी जाने के इशारे करने लगा, लोग इशारा देखते ही आगे बढ गए और सिपाही मोबाइल लेकर दौड़ पड़ा और आगे बढ रहे लोगों के वाहनो का मोबाइल से चालान करने लगा, ऐसा दृश्य देखकर दरोगा हँस पड़ा यह बोलते हुए कि, इसका तो अजीब जुगाड़ है।

शरद मिश्र 'सिंधु'

मौजूदा हालात पर ग़ज़ल के चन्द शेर

जहां में रहनुमाई कर रहा है।
करिश्मा वो खुदाई कर रहा है।
जिसे कहते वफ़ा का नाम जग में,
कहो मत बेवफाई कर रहा है।
सफाया आपने देखा नहीं क्या,
ज़मीनी वह सफाई कर रहा है।
असर आराम दायक है वहीं तो,
ज़हर से जो लड़ाई कर रहा है।
सितमगर बाज़ आएगा कभी तो,
जुदा भाई से भाई कर रहा है।
उसे डर है नहीं कुछ आदमी का,
दुआओं की कमाई कर रहा है।
दिया है खाद पानी देशभक्ती,
फसल उम्दा कटाई कर रहा है।
बनाना स्वावलंबी चाहता है,
गरीबों की कशाई कर रहा है।
कशाई..... ऊपर उठाना

सुबोध कुमार दुबे

सम्पादकीय मण्डल

प्रधान संपादकः शरद सिंह 'शरद'
संरक्षकगण– देव किशोर शर्मा, रमेश प्रसाद तिवारी
संपादकः शरद मिश्र
सह संपादक साहित्य– जितेन्द्र कुमार उपाध्याय 'अद्वैत जोगिया'
राजनैतिक विश्लेषक– भव्य प्रकाश शुक्ला
उप– सह संपादकगण–माधवेन्द्र नाथ मिश्रा,प्रशान्त तिवारी,के.डी मिश्रा
ब्यूरो प्रमुख उ.प्र.– जितेन्द्र कुमार सिंह
विधि सलाहकार– निलीश आनन्द अधिवक्ता, अविनाश पाण्डेय
ब्यूरो प्रभारी उ.प्र.– संजय मिश्र 'रजोल'
ब्यूरो प्रभारी हरदोई– हरि कुमार मिश्रा
विधि संवाददाता उच्च न्यायालय खण्डपीठ लखनऊ–देवेन्द नाथ उपाध्याय
ब्यूरो प्रभारी लखनऊ– हरी प्रकाश 'हरि'
ब्यूरो प्रभारी बलरामपुर– शिखर दीप सिंह
ब्यूरो प्रभारी बाराबंकी– के.पी. सिंह
ब्यूरो प्रभारी गोण्डा–आनन्द ठाकुर
साहित्य प्रतिनिधि– अरविन्द रस्तोगी, देवेश द्विवेदी, मंगल प्रसाद राठौर
लखनऊ जनपद न्यायालय विधि प्रतिनिधि– हरिनाथ तिवारी
विधि प्रतिनिधि राज्य ट्रिब्यूनल– विजय करण सिंह चौहान
राज्य प्रतिनिधि– महाराष्ट्र– सात्यकी वर्मा
राज्य प्रतिनिधि– दिल्ली–छोटेलाल गुप्ता
राज्य प्रतिनिधि– पंजाब–शिव कुमार मिश्रा
किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा, सभी उत्तरदायित्व संपादक के होंगे। लेखक अपने विचारों के लिए स्वयं उत्तरदायी। सभी पद अवैतनिक, किसी भी पदाधिकारी को कभी भी बिना नोटिस के पदच्युत किया जा सकेगा।
दिनकर दर्शन चैरिटेबल ट्रस्ट, विश्वम्भर में सर्वाधिकार संरक्षित
किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित
केसरिया स्वर किसी भी प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता, रचनाकार/लेखक कृपया अपनी मूलप्रति संरक्षित रखें।
फोन नं. 8960415670, 8423084196

दीपावली की सफाई

दीपावली की तैयारी जोर शोर से चल रही थी । मुहल्ले के हर घर में रंगाई पुताई का काम चल रहा था । जहां पुताई नहीं हो रही थी वहां भी सफाई का काम तो हो ही रहा था ।आखिर अब दीपावली आने में समय ही कितना बचा था ।

अरे राजो! दीवाली के तीन चार दिन ही हैं कमरों की सफाई कर ले । नीता ने अपने घुटनों पर हाथ रखकर उठते हुए कहा ।

जी बीबी जी इधर का काम निपटा कर सफाई शुरू करती हूं । राजो ने बर्तनों को जल्दी जल्दी धोना शुरू कर दिया। अरे राजो, देख तो गेट पर कौन है , डोरबैल की आवाज सुन नीता ने राजो से कहा ।

जी बीबी जी कहकर राजो अपनी धोती से हाथ पोछती हुई गेट पर गयी फिर वहीं से बोली ,बीबी जी भैया जी आये हैं। गीता ने सुना क्षणिक स्मित उसके मुखमंडल पर थिरकी और फिर वह सामान्य हो गई।

नीता अपनी कुर्सी से उठ खड़ी हुई ।जब से उसके पैरों में चोट आई है वह अधिक चल फिर नहीं पाती है ।फिर भी वह आत्मबल से स्वयं को निरीह नहीं होने देती । राजो उसकी एक मात्र सहायक थी ,जो उसके काम करती रहती ।

नीता खड़ी हुई ही थी कि नलिन उसके सामने आ गया । नलिन गीता का बेटा , इकलौता बेटा जो अपनी पत्नी के साथ घर और शहर से दूर रहता। कभी कभी जब कुछ चाहिए होता ,तब आता एक दो दिन रहता चला जाता। आज उसे देखकर नीता के मन के किसी कोने में आशा की एक नन्ही सी किरन प्रस्फुटित हुई कि संभवत: वह दीपावली पर उसके साथ रहेगा।

नलिन सीधा उस कमरे में गया जहां उसका कुछ सामान रह गया था ।साथ लाया बैग उसने कमरे में रखा और मोबाइल पर बात करता हुआ छत पर चला गया ।कुछ समय बाद आकर खा पीकर सो गया । ठीक भी तो था थका भी होगा ही ।

नीता ने महसूस किया कि वह पूर्व की अपेक्षा इस बार कुछ बदला सा है । आवाज में उतने उपेक्षित भाव नहीं है ।नीता को लगा जैसे नलिन को अपनी गलती का कुछ अहसास हुआ है,जो उसने किसी के बहकावे में आकर उस मां से और परिवार से संपर्क तोड़ की थी जिसने आज उसे इस योग्य बनाया था । उस मां से जिसके सम्मान के लिए वह रात में भी खड़ा दिखता था ।

जिस मां ने अपना सर्वस्व परवरिश में लगा दिया वही मां आज उसके लिए परिचित मात्र थी ।

मां के दूध का, स्नेह का, दुलार का कर्ज क्षण मात्र में उतार दिया था उसने , संबंध तोड़ कर।

दूसरे दिन नीता ने देखा नलिन अपना सारा सामान कमरे से बाहर ला रहा है , नीता बगैर कुछ बोले बस देखती रह गई । बहुत सा वह सामान भी उसने अपने सामान के साथ रखा था जो घर का था ।और आवश्यक भी। कोई बात नहीं उसका अधिकार है। अधिकार? केवल अधिकार ,कोई फर्ज नहीं है? नीता ने स्वयं से ही प्रश्न किया ।

कुछ घंटों के बाद ही सामान गाड़ी में रख गया और वह चला गया ।

नीता निर्विकार निर्लिप्त भाव से मूक दर्शक बनी रही ।

बीबी जी पहले सफाई कर लूं और काम बाद में कर लूंगी ।राजो धोती को कमर में कोसते हुए बोली।

नहीं राजो , सफाई तो हो गई अब क्या करना ।बस एक प्याला चाय बनाकर दे दे और अपना काम करके चली जा ।मुझे डिस्टर्ब मत करना ,कहते हुए नीता की कलम डायरी पर तेजी से नर्तन करने लगी ।

शरद सिंह शरद

गीत

कदम कदम पर नागफनी के,
चुन चुन पौध लगाये हैं।
चुभते हैं जब कांटे पग में,
क्यों इतना घबराये हैं?
बारूदों के ढेर लगाये,
हमने सारी दुनिया में।
बढ़ा ताप दुनिया का लखकर,
क्यों इतना अकुलाये हैं?
बिच्छू का हम मंत्र न जानें,
साँप झाड़ने निकले हैं।
जब विषयुक्त समाज हो गया,
हम काहे पछताये हैं?
जो कहना दिमाग करते हैं,
दिल की बात नहीं सुनते हैं।
दिल दिमाग के बीच हमेशा,
क्यों दीवार उठाये हैं?
पल का नहीं ठिकाना लेकिन,
बात मुद्दतों की करते हैं।
हक गरीब का मार मारकर,
ईर्ष्या द्वेष बढ़ाये हैं।
जीतेंगे संसार एक दिन,
हम तोपों तलवारों से।
ढाई आखर आज तलक,
क्यों पढ़ने से कतराये हैं?
बिना प्यार के सकल विश्व को,
जीत नहीं हम सकते हैं।
सीधा वह पैगाम चन्द्र का,
समझ नहीं क्यों पाये हैं?

चंद्र भान

केसरिया धारी उ. प्र. के मुख्यमंत्री पद की शपथ के अवसर पर सृजित घनाक्षरी छंद

धूल फांक रहे थे जो छंद मेरी डायरी में, आज उनको निकालने का वक्त आ गया।

प्रश्न देश के जटिल आए यदि सामने तो, उत्तर प्रदेश बन उत्तर सा छा गया।

थे आतंक के जो अपराधी छाए हर ओर, सिंह बन उनका हृदय दहला गया।

रग रग में प्रत्येक रक्त बूंद में भी जैसे, संत कोई योगी बन करके समा गया।

शरद मिश्र सिंधु अधिवक्ता

मान देते चलो मान की चाह में (गंगोदक सवैया)

रत्न ही रत्न से है भरी ये धरा,
अंत मानो नहीं खोज की थाह में।
ज्ञान का अंत होता नहीं है कभी,
जिंदगी श्रेष्ठ है ज्ञान की राह में।।
देख के पंथ को पैर आगे धरो,
पूर्व छाया दिये धूप की दाह में।
पीत होके गिरे पत्र भी पूज्य हैं,
मान देते चलो मान की चाह में।।

डा०सत्यदेव प्रसाद द्विवेदी
पथिक, लखनऊ

माँ की पूजा -अर्चना

जला है मेरा, अब दीप विशेष
इसके लौ को यूं ही जलने दो
दियाली बनाई काया की हमने
रुधिर का तेल इसमे भरने दो ...

वर्तिका लगी सत्कर्म की इसमे
क्रोध - दंभ इसमे जलने दो
मैं नहीं ला पाया पुष्पों का हार
मन का भाव इसमे रमने दो

जला है मेरा, अब दीप विशेष
इसके लौ को यूं ही जलने दो
कहाँ सुगंध सुलगाने जाऊं
राग - द्वेष इसमे जलने दो

लाये हैं साथी नैवेद्य विविध
मन अर्पित मुझको करने दो,
क्यों लाऊं मैं गंगा का जल
मुझे अश्रु स्नेह अर्पित करने दो

नहीं रागिनी कोई आरती की
हृदय राग इसमे भरने दो
जला है मेरा, अब दीप विशेष
इसके लौ को यूं ही जलने दो ।

अनभिज्ञ तंत्र विद्या से हूँ मैं
भाव मंत्र मुझको पढ़ने दो
रोली तिलक लगता हूँ नहीं
शुचिता चन्दन अर्पित करने दो

औरों के जितनी बड़ी नहीं यह
दिव्यता की एक छटा है इसमे
दिग- दिगंत तक दिव्यता को
माँ के स्नेहाशीष को फैलने दो

जला है मेरा, अब दीप विशेष
इसके लौ को यूं ही जलने दो ॥

"डॉ जयप्रकाश तिवारी"
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

उद्‌बोधन

केसरिया स्वर जगा रहा है, जागो हुआ सवेरा।

बीती निशा है काली, छायी उषा की लाली।
शीतल सुरभि निराली, बहती है डाली-डाली।
तेरी नींद कब खुलेगी, अब तो नही अंधेरा ।।1

सर में सरोज फूले, उन पर भ्रमर है झूले।
चिड़ियों ने कण्ठ खोले, मानो सुधा सी घोले।
प्राची दिशा में देखो, रवि ला रहे उजेला।। 2

छल-छिद्र मोह- माया, का तू रहा सताया।
पातक सदा कमाया, नर तन वृथा गंवाया ।
नर जन्म यह सफल हो, क्या बोल लक्ष्य तेरा।। 3

अब बीन को उठा लो, स्वर साज को संभालो।
सरगम प्रणव निकालो, सत्यम् शिवम को गा लो।
नूतन सृजन की बेला, सत्यम लगाती टेरा।।4
केसरिया स्वर जगा रहा है, जागो हुआ सवेरा -----

श्रीमती सत्यम चोपड़ा

ओ सजना,

लाय दियौ कंगना, सजन गोहूँ भे हैं भरपूर।

कहे रही पिछली छमाही लियौ झुमका।
कबहूँ न नाहीं किहेउ, फुसलायेव हमका।।
अबकी मनबै ना, बहानेबाज हौ तुम मसहूर।
लाय दियौ कंगना, सजन गोहूँ भे हैं भरपूर।।

जइसे फरैं फूलैं खुब अँबिया करौंदा।
वइसेहे यू सुखी रहै आपन घरौंदा।।
कलह अावै ना, बजै घर घर बीणा संतूर।
लाय दियौ कंगना, सजन गोहूँ भे हैं भरपूर।

डा. सुरेश प्रकाश शुक्ला

बात होती किस अमन की, मुझको जलता घर दिखा।
फूल होने चाहिए थे, हाथ में खंजर दिखा।
वो मिलाते आँख ना औ दूर से बातें करें।
कौन जाने आदमी को आदमी से डर दिखा।
काट लेते हैं गला, मिलते हैं जब वो प्यार से।
खून के प्यासे हुए सब लूट का मंजर दिखा।।

अरविंद रस्तोगी

नाना लिखें, नानी लिखें.
आओ एक कहानी लिखें.

गौरैया का आना लिखें.
चहक चहक कर खाना लिखें.
छत पर बिखरा दाना पानी,
दया भाव दर्शाना लिखें.

आँगन धूप का आना लिखें.
मस्त पवन मस्ताना लिखें.
लईया, चूड़ा, चना, चबेना,
खाना और गिराना लिखें.

छत पर आना जाना लिखें.

कटी पतंग ललचाना लिखें.
गिल्ली डंडा, कंचा, कुश्ती,
जमकर दौड़ लगाना लिखें.

छिपकर घर से जाना लिखें.
मस्ती, मौज, बहाना लिखें.
कंपट , पट्टी , गुड़ के सेव,
अमरस चूस कर खाना लिखें.

वर्षा ऋतु का आना लिखें.
पानी नाव बहाना लिखें.
मीठी मीठी याद संजोयें,
बचपन का बचकाना लिखें.

श्याम रोहित

पाबंद भी है- और ढीली-गीली है

पानी जैसा जिसका अंतरमन -
उसको वैसी बदरंग या रंगीली है।

बहुरूपिये का रूप ही सारा नकली है
ढोंगी रूप पर मर-मिटना बेअक्ली है
सीरत यद्यपि है दुर्लभ इस जग में
एक भी मिले-तो- सुरीली डफली है !

कब किसके हाथ आयी ये तितली है
हरजाई भरमाकर दूर ही निकली है
सपन सलोना सच हो तो खाक खिलौना
फूटा बुद्बुदा लागे हीरे की थैली फिसली है।

जितेंद्र कुमार उपाध्याय अद्वैतजोगीया

दीप बालें मिल जुल के तिमिर को हटाएं,
राज तम तोम का भी बचना न चाहिए,
दीप शिखा रश्मि ज्योति का बिखेरे भी उजास,
विश्व भाल पे तमस रहना न चाहिए,
हिंसा घृणा द्वेष मन प्रांगण में रहें नहीं,
और लोभ मोह कहीं दिखना न चाहिए,
जन गण मन लेसे गली गली प्रेम दीप,
धार नेह सुधा वाली थमना न चाहिए।।

शरद सिंह शरद

केसरिया स्वर के प्रवेशांक के लोकार्पण के कुछ दृश्य

वह बेचारी

(उपन्यास)

गतांक से आगे

सूरज ने लुकाछिपी का खेल शुरू कर दिया था ।पक्षी आसमान में अठखेलियां कर रहे थे ।फिर पक्षियों ने एक ओर उड़ान भरनी शुरू कर दी । बादलों ने अपने संगठन का परिचय देकर सूरज को चारों तो ओर से ढक लिया ।

रश्मि ! इन बादलों और सूरज को देख कुछ समझी ?, रोहित बोला ।

हां रोहित हमें आफिस के लोगों को संगठित करना होगा और इस संगठन की शक्ति से ही हम आगे बढ़ सकते है।

फिर उसने घड़ी की ओर देखा ,बोली अरे पांच बजने वाला है भूख भी लग रही है ,चलो चलते हैं कुछ खाकर घर चलें बादल भी घिरते आ रहे हैं ।

ठीक है चलो कहता हुआ रोहित खड़ा हो गया और रश्मि का हाथ पकड़ गाड़ी में आ गाया और गाड़ी स्टार्ट कर दी,उसने एक रेस्तरां के आगे गाड़ी रोक दी । दोनों ने कुछ हल्का फुल्का खाया और रेस्तरां से बाहर आ गये ।

बादलों ने आसमान पर अपना आधिपत्य जमा लिया था ,लग रहा था कुछ ही समय में जमकर बारिश होगी।

रश्मि ने ड्राइविंग सीट संभाली रोहित पास ही बैठ गया ।रश्मि ने कार का रुख घर की ओर न करके शहर के बाहर कर दिया ।

अरे इधर कहां ,घर चल रहे थे । रोहित बोला ।

रोहित ! मौसम बहुत अच्छा है थोड़ा इधर घूमते चलते हैं और रश्मि ने कार दौड़ा दी ।

काफी देर निरुद्देश्य कार दौड़ती रही ।बारिश तेज हो गई थी काले काले बादल छा गये थे ।छः बजे ही रात हो गई थी । रश्मि को इस मौसम में कार दौड़ाना बहुत अच्छा लगता था ।

अब घर चलो रश्मि , बारिश तेज हो रही है सड़क पर कोई दिखाई नहीं दे रहा है।

रश्मि ने कार का रुख घर की ओर किया और कुछ ही समय में दोनों घर पहुंच गये ।

देव वहीं बैठा था इन दोनों को साथ और थोड़ा भीगा हुआ देखकर उसने बुरा सा मुंह बनाया ,पर उन दोनों ने कोई ध्यान नहीं दिया ।

आ गये तुम लोग ,जल्दी से चेंज कर लो और चाय काफी ले लो ,भीग गये हो ।

हां पापा कार से अंदर आने में ही हम भीग गये , बहुत तेज बारिश है हम चेंज कर लेते हैं ।रश्मि बोली ।

अब तो परीक्षा समाप्त ,तो सारा दिन घूमना और मस्ती , है न रोहित ? देव बोला ।

रोहित समझ गया वह क्या कह रहा है । उसने भी कहा हां और क्या,अब खाली हैं तो जो काम उन दिनों नहीं हो पा रहे थे वह भी होंगे और मस्ती तो है ही ।वह हंसा ।

कुछ पता लगाना है कुछ खोजबीन करनी है अब भी बहुत काम है रोहित फिर हंसा ।

तो तुम लोग शुरू कहां से करोगे कुछ सोचा ? नीलकांत जी बोले ।

अभी पता लगालूं अंकल फिर सोचूंगा । रोहित बोला ।

देव जैसे आश्वस्त हो गया ,पता करने की बात पर वह शंकित हो गया था । लेकिन रोहित पढ़ाई के बारे में बात कर रहा था ।वह सुनकर वह आश्वस्त हो गया।

दूसरे दिन सुबह ही रोहित आ गया था ,रश्मि तैयार थी । रोहित के आते ही रश्मि बोली आ गये रोहित ,चलो चलते हैं ।

हां चलो । रोहित ने देखा आज रश्मि बहुत खुश दिखाई दे रही थी साथ ही उसकी आंखें बता रहीं थीं कि वह रात भर सोई भी नहीं है ।सोया तो रोहित भी नहीं था ।न जाने क्यों रात से कुछ अलग ही अहसास हो रहा था उसे ।वह सारी रात रश्मि और भविष्य के विषय में ही सोचता रहा था ,कभी खुश होता कभी यह सोचकर कि जो चाहते हैं वह मिल भी पायेगा , कहां वह एक साधारण परिवार का इकलौता बेटा और कहां रश्मि इतने बड़े व्यवसाई की इकलौती बेटी ,जमीन आसमान का अंतर ।पर नीलकांत जी में कोई घमंड नहीं है मुझे मेरे परिवार से वह बहुत स्नेह रखते हैं इन सब को सोचते सोचते रात यूं ही बीत गयी थी ।

रश्मि को भी तो कुछ ऐसे ही विचारों ने सारी रात सोने नहीं दिया था लेकिन वह रोहित के सानिध्य का अहसास कर बहुत खुश थी ।वह जानती थी कि उसके पापा उसकी इच्छा के विरुद्ध नहीं होंगे ।

दोनों कानपुर से लखनऊ जाने वाली सड़क पर निकल पड़े थे ।रोहित निरंतर रश्मि के चेहरे को देखे जा रहा था ।उसकी बड़ी-बड़ी कजरारी आंखें , प्रकृति प्रदत्त रक्तिम ओंठ काले घने लम्बे बाल गोल आकर्षित चेहरा सब कुछ बहुत सुंदर लग रहा था अभी तक तो रोहित ने ऐसे देखा ही नहीं था अब वह महसूस कर रहा था रश्मि को, उसके सौंदर्य को ।वह बार बार कार के शीशे में उसे देखे जा रहा था ।

क्या देख रहे हो रोहित ? सहसा रश्मि पूछ बैठी ।

तुम्हें , रोहित मुस्कराया ।

अभी तक तो कभी ऐसे नहीं देखते थे ,अब क्या हुआ ? रश्मि बोली।

अभी तक रात रात मेरे लिए तुम जागती थीं क्या ,आज क्यो ? रोहित ने उसी से प्रश्न किया ।

मेरे लिए ही न ?

क्यों ,कैसे कह सकते हो मैं तुम्हारे लिए जागती रही ।रश्मि बोली ।

इसका मतलब तुम भी सारी रात नहीं सोई हो न ? रोहित बोला।

तुम भी ? मतलब तुम भी नहीं सोये ? रश्मि बोली ।

हां रश्मि सो ही नहीं पाया जैसे ही आंख बंद करता , तुम्हारा चेहरा सामने आ जाता । रोहित बोला ।

मेरा भी कुछ ऐसा ही हाल था , कल के तुम्हारे स्पर्श का सुखद अहसास , फिर कहीं न कहीं भविष्य का डर सोने ही नहीं दे रहा था ।रश्मि बोली।

बातों के साथ कब वे लोग कानपुर से लखनऊ आ गये पता ही नहीं चला ।

वे लोग सीधे आफिस पहुंचे । रोहित और रश्मि को आफिस में देख कर्मचारियों ने आश्चर्य मिश्रित अभिवादन किया। बहुत समय के बाद आये हैं आप लोग ,बड़े साहब भी नहीं आते देव बाबू कहते हैं वह अब कभी नहीं आयेंगे ।एक कर्मचारी बोला ।

हां वह थोड़ा व्यस्त हैं ।जल्दी ही आयेंगे। हम लोग तो ऐसे ही लखनऊ घूमने आये थे तो सोचा आप लोगों से भी मिल लेते हैं । रोहित ने कहा ।

अरे रश्मि बिटिया और रोहित आये हैं ,मैनेजर ने आते हुए कहा । शंकर कुछ चाय पानी का प्रबंध करो ,चलो बेटा ,आफिस में बैठो चलकर ।

दोनो ने मैनेजर का अभिवादन किया फिर रश्मि बोली चाचा हम लोग नाश्ता करके निकले थे । लखनऊ घूमने आए तो सोचा आप सब लोगों से भी मिल लें ।

अच्छा किया बेटा ,चलो आफिस में बैठो ।और मैनेजर के साथ वह दोनों नीलकांत जी के केबिन में आ गये ।

बहुत समय बाद आए हो ,साहब भी नहीं आये,हफ्ते में एक बार तो आकर देख लिया करें ।मैनेजर बोला ।

क्यो चाचा देव तो आते हैं ।रश्मि बोली ।

हां बिटिया ,देव बाबू आते हैं ।वह अपने ही ढंग से काम करते हैं, उन्होंने बहुत से कर्मचारियों को निकाल कर नये रख लिए हैं ,जो न जाने क्या करते हैं कहां करते हैं । यहां तो दिखाई ही नहीं देते ,कभी कभी आते हैं और चले जाते हैं ।जब देव बाबू आते हैं तो सब आ जाते हैं केबिन बंद कर बातें करते रहते हैं फिर चले जाते हैं ।मैनेजर बोला ।

चाचा ,देव बाबू तो रहते होंगे या वह भी चले जाते हैं ? रोहित ने पूछा ।

वह भी चले जाते हैं बातें करने के बाद ,क्या बात करते हैं यह कोई नहीं जानता किसी को उधर जाने की मनाही है । कभी कभी एकाउंटेंट को रजिस्टर लेकर बुलाते हैं और रजिस्टर लेकर उसको भेज देते हैं फिर कुछ करके रजिस्टर लेकर चले जाते हैं ।मैनेजर ने बताया ।

शरद सिंह 'शरद'
प्रधान संपादिका केसरिया स्वर पाक्षिक

और काम कैसा है ? रोहित बोला।

काम गिरता जा रहा है ,माल की कीमतें बढ़ गई हैं गुणवत्ता घट रही है । बाजार में लोग माल पसंद नहीं कर रहे विक्री बहुत कम हो गई है ।

ऐसा क्यों ,कीमत क्यों बढ़ा दी ,और गुणवत्ता कैसे घट गई आप नहीं देखते ? रश्मि बोली ।

मैंने कई बार कहा पहले तो वह टालते रहे फिर एक दिन धमकी दी कि अपने काम से काम रखो वरना तुम्हें भी बाहर का रास्ता दिखा दिया जायेगा ।मैनेजर ने कहा ।

यह आपने पापा को बताया ? रश्मि बोली ।

नहीं बिटिया सबको सख्ती से कहा गया है कि यहां की कोई बात घर तक नहीं जानी चाहिए ।मैनेजर बोला ।

देखते हैं चाचा ,आप रजिस्टर मंगा दीजिए । रोहित बोला

ठीक है बेटा ,कहकर मैनेजर ने एकाउंटेंट को रजिस्टर लेकर बुला भेजा ।

रोहित ने देखा उसमें चार करोड़ का घोटाला हुआ है ।वह कुछ कहने ही जा रहा था कि उसने देखा खिड़की पर कोई उन लोगो की बातें सुन रहा है ।

रजिस्टर तो सब बहुत मेंटेन किये हैं चाचा ,देव बाबू बहुत परिश्रम से काम कर रहे हैं उनके काम में कोई त्रुटि हो ही नहीं सकती ।रोहित ने ऊंची आवाज में कहा ,साथ ही रश्मि को खिड़की की ओर इशारा किया ।

रश्मि ऐसे टहलती सी खिड़की की ओर बढ़ी जैसे बाहर का दृश्य देख रही हो ।

रश्मि को आते देख खिड़की से झांकता व्यक्ति नीचे झुक गया ।रश्मि ने देखा वह झुके झुके ही तेजी से चला गया । यहां सब बहुत अच्छा हो गया ,साफ है सब कुछ ।

ऋसाफ है सब कुछॠ से रोहित समझ गया कि व्यक्ति चला गया है ।

चाचा यह चार करोड़ का क्या है ? रोहित बोला ।

मैनेजर उसे देखने लगा जो रोहित अभी देव की प्रशंसा कर रहा था वह अनायास ही चार करोड़ की फिर बात करने लगा। फिर भी इस पर उसने कुछ ध्यान नहीं दिया ।बोला देव बाबू ने बताया कि साहब एक और शोरूम खोल रहे हैं ,मैंने कहा साहब ने तो कुछ बताया नहीं कोई सूचना नहीं आई ।तो देव बाबू ने कहा अब मैं तो कह रहा हूं और कैसी सूचना चाहिए ।

इतना पैसा कैसे ? कोई कागज था उनके पास , ? रोहित बोला ,वह कागज कहां है ?

उन्होंने कुछ कागज तैयार किये थे और यह कहकर अपने साथ ले गये कि साहब को दिखाकर साइन लेने हैं । जब तब यहां से कभी दस लाख कभी बीस ,पचास लाख निकालते हैं ,मैंने एक बार डरते डरते पूछा तो कहा यह एकाउंट बंद करना है ,नया बनेगा । जब मैंने साहब से पूछने की बात कही तो मुझे बहुत फटकारा ,तुम्हारी शिकायत साहब से करके नौकरी से निकलवा देंगे बहुत बोलते हो हर बात में । साहब ने सब हमारे नाम किया हुआ है हम जैसा चाहेंगे करेंगे । तुम लोगों को अगर यहां रहना है तो चुप रहो । मैं डर गया ,अगर नौकरी चली गई तो मैं क्या करूंगा ,अभी बच्चे किसी लाइक नहीं हैं पढ़ रहे हैं ।बेटी बड़ी हो रही है उसकी शादी करनी है कैसे कर पायेंगे सब इसलिए चुप रह गया ।मैनेजर ने कहा ।

रोहित और रश्मि समझ रहे थे कि क्या घोटाला हो रहा है , लेकिन अभी कुछ कहना उन लोगों ने उचित नहीं समझा । ठीक है चाचा यह रजिस्टर मेरी कार में ऐसे रखवा दीजिए चाचा किसी को पता न चले कुछ देर के बाद मैं यहां दे जाऊंगा । रोहित बोला और मैनेजर ने रजिस्टर सावधानी से कार में रख दिए ।

अब कार एक पार्क की ओर दौड़ रही थी । पार्क में बैठकर दोनों ने इत्मीनान से रजिस्टर को देखा और जहां जहां संदेह था मार्क किया फिर

शेष पृष्ठ 6 पर

वह बेचारी

पृष्ठ 5 का शेष

एक शाप से फोटोकॉपी निकाल कर अपने पास रखी और रजिस्टर आफिस में पहुंचा दिए यह काम इतनी सावधानी से किया गया कि किसी को कानों-कान पता नहीं चला केवल मैनेजर जानते थे कि रजिस्टर बाहर ले जाये गये और वापिस आ गये।

चलो अब कहीं बैठकर विचार करते हैं क्या करना चाहिए ,रश्मि बोली ।

हां चलो कहीं बैठते हैं ,आज का काम इतना ही ठीक है , हमें जल्दी नहीं करनी है ,जल्दबाजी में ऐसा न हो हमारे ऊपर ही सारा दोष आ जाये और हम कुछ न कर सकें । रोहित बोला ।

हां यह तो है ,तो आज कहीं दूसरे शोरूम में तो जा नहीं सकते चलो कहीं ऐसी जगह चलते हैं जहां अच्छा लगे

मेरे साथ अच्छा नहीं लग रहा ? रोहित शरारत से बोला ।

मैं बैठने को कह रही हूं तुम तो साथ ही हो , ।

मतलब अच्छा लग रहा है तुम्हें मेरी आदत होती जा रही है अब देखो न सुबह से ही मेरे साथ निकल आई हो , रोहित मुस्कराया वह रश्मि को और स्वयं को भी टेंशन से बाहर लाने के लिए यह सब बोल रहा था वह चाहता था कि सहजता से सब काम हो जिससे कोई गलत कदम न उठ जाये जो उल्टा पड़ जाये ।

बातें करते हुए दोनों एक पार्क में जा बैठे पार्क की खूबसूरती देखते ही बनती थी ,स्थान स्थान पर रंग बिरंगे फूलों की क्यारियां जो अपनी छटा से बरबस ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेती , पौधों की कटिंग करके भांति भांति के पशुओं का आकार दिया गया था फव्वारों की गिरती छोटी-छोटी बूंदें तन मन को भिगोकर एक उमंग भर देती दोनों एक फव्वारे से कुछ दूरी पर बैठे थे हवा की लहरों पर सवार हो कभी कभी कुछ बूंदें उनके पास आ जाती मानों उनका श्रम दूर कर रही हों उनके मन को प्रसन्न कर रही हों । दोनो ही उस दृश्य को देखकर अपनी चिंता से बाहर आ गये और उस प्रकृति के सौंदर्य में खो गये।

जब भी फव्वारे से निकलती बूंदें उनको भिगोती रोहित रश्मि के चेहरे पर पड़ी बूंदों को प्यार से निहारता उसका चेहरा मोतियों के मध्य खिलते कमल सा खिल उठता और रोहित उसे देखता ही जा रहा था निरंतर।

सहसा रश्मि बोली क्या देख रहे हो रोहित ? कुछ बोलो तो।

क्या बोलूं रश्मि ! केवल देखना चाहता हूं ।

क्या ? क्या देख रहे हो ,ऐसा क्या है हमें भी दिखाओ।

तुम नहीं देख सकोगी रश्मि ।

क्यो ,क्यो नही देख सकती ।

अच्छा देखो कहकर उसने अपने मोबाइल की स्क्रीन उसके सामने कर दी। बोला यह।

और रश्मि अपना चेहरा देख कुछ लजाई फिर बोली इसका क्या यह तो रोज देखते हो।

हां देखता हूं देखता रहा हूं पर ऐसा कभी नहीं देखा ऐसा नयापन । रोहित बोला।

ऐसा अब क्या हो गया चाइस साल से यही चेहरा देखते आ रहे हो रश्मि भी मुस्कराई।

हां चेहरा तो देखा लेकिन मोतियों के बीच कमल अब देखा । रोहित फिर मुस्कराया।

धत ! रश्मि ने कहकर अपना चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया रश्मि रोहित की बातों से खुश भी थी लेकिन कुछ लजा भी रही थी ।

रश्मि लजाती हुई बहुत खूबसूरत लग रही थी सहसा नटखट हवा के एक झोंके ने उसके बालों की एक लट चेहरे पर लाकर उसकी खूबसूरती को और बढ़ा दिया और रोहित उस लट में अपनी उंगलियां फंसा कर खेलने लगा रश्मि ने अपनी कजरारी मदभरी आंखें बंद कर ली उसे रोहित का यूं लट से खेलना अच्छा लग रहा था।

रश्मि ! रोहित बोला ।

हां रोहित ! रश्मि स्वप्न में खोई सी बोली।

तुम्हें मेरा साथ कैसा लगता है , मुझसे डर नहीं लगता ? रोहित बोला।

तुम्हारे साथ होने पर मैं सब कुछ भूलने लगी हूं लगता है मुझे कोई डर नहीं है किसी से, किंतु रोहित , कभी कभी बहुत डर लगता है ।

कैसा डर ,किसका डर ? रश्मि ।

घर में छाये ,देव से डर, कहीं वह कुछ ऐसा न कर बैठे कि हम बिखर जाये ,एक अनजानी आशंका मन मस्तिष्क को दबोच रही है ऐसा लगता है जैसे हमारे चारों ओर कुछ ऐसा चल रहा है जिससे अनिष्ट निश्चित है रश्मि के मस्तक पर चिंता की लकीरें दिखाई देने लगी थी और रोहित जो रश्मि की मासूम खूबसूरती को नजरों के द्वारा आत्मसात कर रहा था ,रश्मि को चिंतित देख चिंताग्रस्त हो गया सच ही तो कह रही है रश्मि यह देव न जाने क्या कर बैठे फिर दोनों इस पर विचार करने लगे कि क्या किया जाये ।

क्रमशः

वे सत्ता पाकर मद में हैं चूर

पर शराब बंदी की वकालत करते हैं भरपूर।

2-

नेता जी अपने को भगत कहलाते हैं,
उन्हें देखकर बगुले भी शर्माते हैं।

3-

गिरगिट की तुलना नेता से करना पाप है,
क्योंकि गिरगिट बदनाम है और नेता महान है।

4-

उनके घर के बाहर लिखा था,
कुत्तों से सावधान,
किसी ने उसके नीचे लिखा,
यहां कुत्ते रहते हैं।

5-

उनसे किसी ने कहा,
पेड़ के नीचे शीतल छाया मिलती है,
कल से वो पेड़ के नीचे खड़े हैं,
न शीतल आई और न छाया।

जितेन्द्र कुमार सिंह, बरेली

शरद काल

गिलम -गलीचा कोंच जिन पै लिहाफ साफ,
हीटर की ताप शीत पाप की कटैया है ।
खान पान आला है सुबाला लिए हाला है,
विशाला चित्रशाला तिन्हें सुख सरसैया है ।
तात मात भैया नाहिं,पास में रुपैया नाहिं ,
ओढ़िवे उढ़ैया नाहिं घर न मढ़ैया है।
दीन दुखियान और अबला वियोगिन को ,
दरद को बढ़ैया ये शरदद की समैया है ।।

रोगिन को त्रास और बिलास देश भोगिन को,
कविनु हुलास बीर बीरता समाई है ।
शाहनु उछाह गम आह लै वियोगिन कूं ,
दाह दुर्भागिनु अनुरागिनु सुहाई है ।
जोगी लगे जपन,तपन तपधारी लगे ,
हारी लगे हरनु सँभारि के जुताई है।
काहू -काहू को सुखद काहू - काहू को दुखद,
काहू - काहू को समान ये शरद द की जुन्हाई है ।।

श्याम सुंदर शर्मा

बिजलियों का प्रणयनाद

भावना की परिधि में मुहब्बत तले,
बाजुओं में तुम्हारी बहकने लगी।

जिंदगी की मिलन लुल होने लगी।
आँख की निज नमी सूखकर यों हँसी।
रूप सौन्दर्य खिलकर कंवल हो गया,
मन नगर की गली में खुशी ही खुशी।

प्रेम की शुचि नदी में नहाकर पिया,
फूल खुशबू सरीखी महकने लगी।
भावना की परिधि में मुहब्बत तले,
बाजुओं में तुम्हारी बहकने लगी।

चाहतों की घटाएं घिरी उर गगन,
बिजलियों का प्रणयनाद गर्जन करे।
आत्म से आत्म का मीत है यह मिलन,
मुक्त उन्मुक्त मन आज नर्तन करे।

प्रेम शाश्वत है निश्छल निराकार है,
प्रेम उपहार पाकर चहकने लगी।
भावना की परिधि में मुहब्बत तले,
बाजुओं में तुम्हारी बहकने लगी।

पास तुम आ गये सुहि गाने लगी,
प्रेम वातावरण में जगत नव हुआ।
तीव्र गति धड़कनों की बढ़ी इस तरह,
रोकना अब स्वयं को असम्भव हुआ।

इक धुँआ सा उठा निज हृदय मध्य में,
चाँदनी रात में भी दहकने लगी।
भावना की परिधि में मुहब्बत तले,
बाजुओं में तुम्हारी बहकने लगी।

डॉ रेनू द्विवेदी
अधिवक्ता/साहित्यकार
राष्ट्रीय अध्यक्ष
चारु काव्यांगन

साधु चरित्र

धन्य हैं जे नित ध्यानु धरैं,औ गुमानु भरें हरि के गुन गावैं ।
साधुनु संगति सारु लहैं, सद् वृत्तनु ही नित चितु रमावैं ।।
करि करि सुकृति समाज को सेवें,सुरीति,सुकीरति ज्योति जगावैं।
मानुस बीच मराल बने,जग पंकहि सोधि कैं कंज खिलावैं ।।

हैं जे सहिष्णु चराकर कूं, पर- कारज साधि परम सुख पावैं।
हाँसि करैं जे सुसंग बुजुर्गनु, पाइँ पलोटि कैं सीस नवावैं ।।
और की पीर सों होंइ द्रवित, अपने सिर धारि तिनहिं सरसावैं ।
खावैं स्वयं न,खिलाइकैं औरनु, पर-उपकार प्रसून खिलावैं ।।

देव किशोर शर्मा
लखनऊ

प्रवृत्ति -

दुष्प्रवृत्ति ।
मन -
दुश्मन ।
किसके साथ ।
मेरे सिर्फ मेरे ।
फिर क्यूं दूसरे को
दुश्मन कहते
हो ।
दुश को हटाओ ,
निर्विकार प्रवृत्ति और मन को पाओ।
अवनि का सौंदर्य खिल उठेगा ।
कायनात मुस्करा
उठेगी ।
मन खिलखिला
उठेगा ।

जितेन्द्र कुमार जैन
जय जितेन्द्र

राम राम राम राम राम जपिए सदैव,जीवन कभी भी ये अकारथ न जायेगा।

रावणी कुवृत्ति निज मन से निकालोगे तो ,उर मध्य राम आके खुद ही समायेगा।

राम प्रभु,राम प्रेम,राम सुख,सुहि राम,राम जिस रूप में देखोगे वही भायेगा।

राम के बताए मार्ग पे चलो सदैव तब,रामराज्य स्वयमेव यहाँ लौट आयेगा।।

अशोक पाण्डेय 'अनहद'

ठाकुर की ठक ठक

आज की बात जो मैं आज ही कह जाऊंगा।
मैं अपनी आंख के आंसू छुपा न पाऊंगा।
तुम्हारी याद इस दिल से कभी गई ही कहां,
याद के शेर मगर अब नहीं सुनाऊंगा।

आनंद ठाकुर

हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

उन्नत है उन्नत रहेगी सदा हिंदी और,
संस्कृत भाषा माता इसकी कही गई,
रचे गए देव ग्रंथ संस्कृत में ही, अतः-
-लिए उन्हीं उन्हीं का हिंदी भी गई नई,
सरस सरल शब्दों - भरा भंडार है ये,
कालजई भाषा जनमानस की ये भई,
हिंदी वंदनीय भावों को पिरोती गई और,
खुद में संजोती गई सदियां कई कई।

शरद सिंह शरद
अध्यक्ष/संस्थापक दिनकर दर्शन चैरिटेबल ट्रस्ट
प्रधान संपादिका केसरिया स्वर पाक्षिक

आश्रयदाता

सदपुरूष के लिए आश्रयदाता अथवा छाया दाता वृछ का एक एक तृण एवम पत्ता आदरणीय होता है। महा भारतकालीन आख्यान है ,पांडव अज्ञातवास के दौरान विभिन्नरूपो में मत्स्य राज विराट की सेवा थे। पांचाली सैरंधरी के वेश में महारानी सुनयना की सेवा में थी ,महारानी का भाई एवम मत्स्य राज का सेनापति कीचक की की कुदृष्टि पांचाली पर पड़ी और उसने पांचाली को अपनी पत्नी बनाने का असफल प्रयास किया और अंततः रसोइए बल्लभ रूपी भीम द्वारा मारा गया ,यह समाचार पुआल की अग्नि सरीखे सम्पूर्ण आर्यावर्त में फेल गया, जिसके प्रभाव से हस्तिनापुर भी अछूता नहीं रहा, प्रारंभिक स्तर पर युवराज दुर्योधन शकुनी दुशासन तथा अंगराज कर्ण के मध्य मंत्रणा हुई और अंततः प्रकरण कुरू राज्य सभा में विचारण हेतु पहुंचा और जहां इस गंभीर मुद्दे पर चर्चा हुई,चर्चा में यह बात उभर कर आई की कीचक महाबलशाली था उसका वध तत्समय महामहिम बलराम जी,महाबली भीम , अंग राज कर्ण युवराज दुर्योधन के आर्यावर्त का कोई योद्धा नहीं कर सकता था इसलिए हो न हो पांडव विराट राज्य में ही हो और महाबली भीम ने ही कीचक का वध किया हो ,इस तथ्य की प्रमाणिकता जांचने के लिए विराट राज पर आक्रमण अपरहार्य है ,दुर्योधन ने अपने करीबियों के परामर्श पर अपने मित्र त्रिगर्त राज सुशर्मा को भी विराट की सीमा पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया।विराट राज्य दोनो दिशाओं से आक्रमण से घिर गया।दोनो सीमाओं पर घनघोर रण हुआ और बृहंनला रूपी अर्जुन के सहयोग से राजकुमार उत्तर कुरूसेना को तथा कंकरूपी युधिष्ठिर एवम वल्लभ रूपी भीम तथा अन्य छद्मवेशधारी पांडवो की सहायता से मत्स्य राज विराट सुषर्मा पर भारी साबित हुए एवम और अंततोगत्वा विजयश्री विराट राज्य के पक्छ में हासिल हुई, दोनो दिशाओं से विजयश्री प्राप्त होने पर विराट को अत्यंत प्रसन्नता हुई और विराट नगर में उत्सव का माहौल छा गय,इस खुशी के मौके पर द्युतप्रेमी मत्स्य राज विराट चौसर केआनंद से कैसे वंचित रहते और दरबारी कनक के साथ चौसर के आनंद में सराबोर हो रहे थे इसी मध्य विजित हुए दोनो युद्धों के परिदृश्य पर विराट नरेश ,दरबारी कंक और अन्य दरबारियों से वार्तालाप कर रहे थे ,चर्चा के दरम्यान कङ्कक ने महराज के समक्ष यह बात कह दी की जब युवराज उत्तर के साथ सारथी वृहन्नला भी था तो विजय होनी निश्चित थी , इस बात से महराज क्रोधित हो उठे और पांशा कनक के मुंह पर मार दिया जिससे कङ्कक रूपी युधिष्ठिर के मुहसे रक्त बहने लगा , इसी मध्य वृहन्नल रूपी अर्जुन के आने की सूचना [illegible] मिली ,चूंकि युधिष्ठिर इस तथ्य को जानते थे की अर्जुन उनको रक्तरंजित देखकर महाराज पर आक्रमण भी कर सकता है और यहां तक की हत्या भी कर सकता है इसलिए उन्होंने अर्जुन को तबतक बाहर रोकने की व्यवस्था कर दी जब तक युधिष्ठिर के चेहरे पर आच्छादित रक्त कि साफाई नहीं हो जाती है और वातावरण सामान्य नहीं हो जाता है। रक्त के छींटों के पांचाली द्वारा सफाई कर देने के उपरांत वृहन्नलारूपी अर्जुन युवराज उत्तर के साथ महराज के समक्ष उपस्थित हुए और युवराज उत्तर के सफलता और महराज के विजई होने पर बढ़ाई दी एवम हर्ष प्रकट किया ,महराज एवम राज्य परिवार तथा राज्य परिषद एवम जनता जनार्दन के प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा ,सारे पांडवो एवम पांचाली को सीख देते हुए दरबारी कनक रूपी युधिष्ठिर ने कहा की आश्रयदाता अथवा छायादाता का एक एक तृण एवम पत्ता आश्रय पाने वाले के लिए आदरणीय एवंम वंदनीय है उसकी सुरक्षा करना एवम आदर व सम्मान करना आश्रयप्राप्त करने वाले का दायित्व एवम कर्तव्य है।

जय।श्री कृष्ण।

श्रीचंद्र मिश्र अधिवक्ता

श्री राम चले निज मंदिर में

यह है अगस्त की क्रांति पुनः, तिथि शुभ्र पांच को आई है।
सन दो हजार है बीस प्रकट, यह शुभता की परछाई है।
श्री राम चले निज मंदिर में, निर्माण शुरू है गौरव का।
हां खत्म हो गया समय अशुभ, उस म्लेच्छ वंश के रौरव का।
जेहादी दुष्ट निशाचर जो, हिंसा जिनकी पहचान बनी।
नादिरशाहों चंगेजों संग, तैमूरों की थी भीड़ घनी।
वो नर पिशाच जो भारत का, अभिमान रौंदना चाह रहे।
सदियों से क़ाशी मथुरा को,- भी, जकड़ हृदय को ढाह रहे।
हां आज पिशाची मस्तक को, हम कुचलें दिल में उठी आग।
हाथों से तोड़ें मुंड और, गुंजित हो फिर भैरवी राग।
ऐसे ही गुरु गोविंद नहीं, लड़ने आए थे अवधपुरी।
है भारत का अभिमान यही, है शुभ्र सुधा आध्यात्म धुरी।
सरयू की लहरें पूंछ रहीं, क्यों घाव ह्रदय पर दिया गया।
हिंसा जिहाद की परिपाटी, क्रूरता वहां है नहीं दया।
हां राजनीति भूले उसको, दे भुला भले वह काशी को।
मथुरा की पीड़ा भूले भी, भूले कान्हा की झांकी को।
साहित्य नहीं पर भूलेगा, चाहे हजार सदियां गुजरें।
हम जिएं भले सौ साल यहां, लड़ स्वाभिमान हित आज मरें।
हां अवध हमारी धुरी रही, काशी मथुरा भी अंग मगर।
यह रथ गतिमान रहेगा ही, हो चाहे जितनी कठिन डगर।
हां शपथ हमे हम कभी नहीं, वह पावन मक्का मांगेंगे।
हम सदा मदीने की जानिब, जब चाहो शीष झुका देंगे।
पर काशी मथुरा की खातिर, उत्सर्ग हमारा नारा है।
यह सारी दुनिया जान चुकी, जेहाद क्रूर हत्यारा है।
सुन किंतु अरे ओ निठुर समय, यदि धैर्य हिंद का टूटेगा।
तब सभी लुटेरे भागेंगे, सम्मान न कोई लूटेगा।
हम काशी मथुरा भी लेंगे, भारत का मान बचाएंगे।
पथ के बाधक हो सजग सुनो,हर बाधा झपट ढहाएंगे।
जय राम राम जय श्याम श्याम, हर-हर बम-बम गुंजित होगा।
फिर विश्व मंच पर भारत का, असली स्वरूप मंचित होगा।

शरद मिश्र सिंधु अधिवक्ता

आओ राम बने

इस युग के रावण से हम
फिर से संग्राम करें।
पुतले जाने कब से जलते
पर रावण के ही पथ चलते
क्यों न हम आसुरी वृत्ति का
काम तमाम करें।
कभी न गुह को गले लगाते
बेर नहीं शबरी के खाते
सीय राम मय समझ
सभी से सीता राम करे
राम संस्कृति ग्राम संस्कृति
भौतिकता से ही सब दुर्गति
अभिलाषा ही हेतु पतन का
यह अनुमान करे
राम चरित से होकर प्रेरित
चले धर्म के पर अविजित
हम अपनी आखिरी सांस तक
बस शुभ काम करें।

संजय मिश्र रंजोल

एक ताज़ा नवगीत

छोड़ो भी!

बेमतलब की बात सोचना छोड़ो भी!
आग लगाकर कुआँ खोदना छोड़ो भी!

छोड़ो भी अपने को बहुत लगाना भी
बहुत हो चुका जगना और जगाना भी

बिन आँसू ही आँख पोछना छोड़ो भी!
छोड़ो भी ये बिना बात सीनाज़ोरी

कथित क्रांति पर काण्ड कह रहे काकोरी

फटा हुआ सा दूध ओटना छोड़ो भी!

छोड़ो भी जो पकड़े बैठे हो कल को
पेड़ काटकर सोच रहे हो जंगल को

बिखरे-बिखरे बाल नोचना छोड़ो भी!

छोड़ो भी उलझे गलियों-चौराहों को
भूलो उन विमर्श करते चरवाहों को

टैटू जैसा नाम गोदना छोड़ो भी!

छोड़ो भी वो कथा-कहानी पुरखों की
बिके सियासत में बापू के चरखों की

सूत कातकर,धूल झोकना छोड़ो भी!

छोड़ो भी क्यों खुरच रहे सच्चाई को?
राम-राम की झूठी रामदुहाई को

खुरचे सच को और कोचना छोड़ो भी!

यश मालवीय
साभार फेसबुक

प्रकाशोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

छोड़ कर सारी विसंगति,
प्यार का दीपक जलाएं,
तम भरे इन रास्तों में,
ज्योत की झालर सजाएं।

त्याग कर मन के कलुष को,
सत्य पथ पर ही बढ़ें हम,
दूर मंजिल रह न पाये,
खोजते राहें चले हम,
कुचल कंटक मार्ग वाले,
पर्वतों पर पथ बनाएं।
छोड़ कर.............।।

मेट कर अज्ञानता सब,
ज्ञान का दीपक जला दें,
बंधुता वसुधैव की हो,
भाव वैरी का मिटा दें,
प्रेम से रौशन जगत कर,
पुष्प गणपति पर चढ़ाएं।
छोड़ कर.............।।

लक्ष्मी हर द्वार आएं,
कर्ममय हों मान्यताएं,
सृजन से भंडार भरकर,
कर्म वीरों को रिझाएं,
बसे श्रम में सभी साधन,
पीढ़ियों को फिर बताएं।
छोड़ कर.............।।

रावणी हर वृत्ति मारें,
हर जिहादी को हराएं,
कुंभकरणी राक्षसों पर,
तीर तरकश के चलाएं,
हिंद को फिर राम मय
कर दें जगत को जगमगाएं।
छोड़ कर.............।।

शरद सिंह शरद

भावों का सार

श्वेत सरल भाव को
संजोता हुआ
खिलखिलाता रहता है
सुबह की ताजी वायु
में अपनी मुस्कुराहट
से देता है भाव
प्रेम का प्रतीक
नये बिम्ब के
विन्यास में लिपटा है
प्रणय की संवेदना
को बिखेरता है
जो लेता है आकार
घुलते-मिलते सपने
जो बुने जाते है
अपने /परायों के बीच
रिश्तों में भी
सुगन्धता का द्योतक
आंगन मे बहती
सरिता सी सुगंध
तुम्हारी स्मृतियों की गहराई
में
महकती रही रजनीगंधा सी
जीवन के ओर/छोर में
सुनहरी धूप में चमचमाता है
नेह को दर्शाता हुआ अर्न्तमन
की शाखाओं
विचारों के तालमेल
में मीठी मिसरी की भांति
जीवन आनंद देता
अपनी सुगन्ध से देता है
जी वन में आनंद
हिलौरे लेता
भर देता है
भावों का सार ....

अलका अस्थाना
'अमृतमयी'

अधिवक्ताओं के हितों से हर सरकार ने किया खिलवाड़

लखनऊ अधिवक्ता आन्दोलन संघ की नियमित बैठकों की श्रृखला में उपस्थित अधिवक्ता अभिषेक सिंह, जितेन्द्र कुमार उपाध्याय, शैलेन्द्र उपाध्याय, रचना मिश्रा रिया, देवेन्द्र नाथ उपाध्याय, विजय करण सिंह चौहान, शिखरदीप सिंह, भव्य शुक्ला, अविनाश पाण्डेय, पाहुलस श्रीवास्तव आदि अधिवक्ताओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। लखनऊ जनपद न्यायालय प्रांगण में जहाँ समवेत स्वर में सभी अधिवक्ताओं ने एक डाकखाना होने की जरूरत बताई, तो अधिवक्ता पेंशन योजना, उच्च आयुर्विज्ञान संस्थानों में अधिवक्ता एवं उनके परिवार की निःशुल्क चिकित्सा सुविधा तथा सर्वोच्च न्यायालय में अनुच्छेद 343 के आलोक में हिन्दी लागू किए जाने आदि विशयों पर जोर शोर से चर्चा हुई और सभी ने अधिवक्ता हितों के लिए की जा रही अधिवक्ता आंदोलन संघ की माँगों का समर्थन किया, बैठक में प्रस्ताव पास किया गया कि आजादी के बाद से ही सभी सरकारों ने अधिवक्ता हितों के साथ खिलवाड़ ही किया है।

विश्व हिन्दू परिषद विधि प्रकोष्ठ की बैठक संपन्न

मानस इनक्लेव गोमती नगर में विश्व हिन्दू परिषद विधि प्रकोष्ठ की बैठक उत्साही कार्यकर्ताओं के उत्साह के साथ संपन्न हुई। बैठक में अधिवक्ता बृजेन्द्र सिंह, संजय रस्तोगी, आलोक शर्मा, पी एन सिंह, करुणाकर श्रीवास्तव, रणविजय सिंह, अरुण कुमार वर्मा, शरद मिश्र, के साथ विश्व हिन्दू परिषद से अमितेश जी भी उपस्थित रहे। लव जिहाद, लैंड जिहाद और निर्दोष हिंदुओं के उत्पीड़न को रोकना बैठक का मुख्य मुद्दा रहा। अपने गठन का एक वर्ष भी अभी संगठन का व्यतीत नहीं हुआ किन्तु विधि प्रकोष्ठ की लोकप्रियता समूचे हिंदुस्तान में अधिवक्ता समाज में सिखर पर है, संगठन की लोकप्रियता से अधिवक्ता बृजेन्द्र सिंह ने प्रसन्नता व्यक्त की, किंतु उन्होंने हिंदुओं के प्रति आसन्न संकट पर भी सभागार को सचेत किया। अंत में पूर्णता मंत्र के साथ बैठक स्थगित की गई।

दिनकर दर्शन चेरिटेबल ट्रस्ट ने अधिवक्ता नरेंद्र तिवारी को किया सम्मानित

विगत दिनों प्रेस क्लब लखनऊ में पद्मश्री डॉ विद्या बिंदु सिंह, एवं अध्यक्ष दिनकर दर्शन चेरिटेबल ट्रस्ट शरद सिंह शरद, तथा प्रोफेसर हरिशंकर मिश्र ने दिनकर दर्शन चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित परिचर्चा कार्यक्रम में अधिवक्ता समाजसेवी नरेंद तिवारी को सम्मान पत्र, अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार देवकिशोर शर्मा, अधिवक्ता रमेश प्रसाद तिवारी, अधिवक्ता दया शंकर पाण्डेय, अधिवक्ता स्वाति सिंह, अधिवक्ता रचना मिश्र, अधिवक्ता आनंद ठाकुर, अधिवक्ता हरि नाथ तिवारी, रचनाधर्मी हरि प्रकाश हरी, राजकिशोर त्रिवेदी आदि भारी संख्या में बुद्धिजीवी वर्ग से लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन शरद मिश्र सिंधु अधिवक्ता ने किया।

अधिवक्ता अमित शुक्ला के सदस्य छावनी परिषद के चुनाव में अधिवक्ताओं में सरगर्मी

लखनऊ, अधिवक्ता अमित शुक्ला, अपनी लोक प्रियता और क्षेत्रीय लोगों से जुड़ाव के कारण क्षेत्रीय जनता में काफी लोक प्रिय है तथा सदस्य छावनी परिषद वार्ड संख्या- 5 के उनके चुनाव में क्षेत्रीय अधिवक्तागणों में सरगर्मी बढ़ गई है। अधिवक्ता विवेक जोशी, अनुमान अवस्थी आदि ने बैठक करके, अधिवक्ता अमित शुक्ला की विजय के लिए रणनीति तैयार की तथा क्षेत्र में जाकर प्रचार करने की योजना बनाई।

केसरिया स्वर

एक सकारात्मक अभियान

भारतीय लोकतंत्र की विसंगतियों के परिमार्जन हेतु सार्थक सुझाव -

1- कोई भी भारतीय नागरिक यदि किसी भी स्तर की सरकारी सेवा में (प्रशासनिक, न्यायिक या किसी अन्य में) चयनित होता है तो, उसका अपनी ज्वाइनिंग के दिन अपनी व अपने परिवार की सम्पत्ति का ब्यौरा देना अनिवार्य हो।

2- प्रत्येक वित्तीय वर्ष के प्रारंभ में उक्त सरकारी कर्मचारी अपनी व अपने परिवार की सम्पत्ति का ब्यौरा दौरान नौकरी देता रहे।

3- किसी भी सरकारी पदाधिकारी को (चाहे वह न्यायिक पदाधिकारी ही क्यों न हो) उसके रिटायरमेंट के बाद पांच वर्ष तक उसे किसी भी प्रकार का पद या लाभ का पद न दिया जाए।

4- किसी भी मीडिया ग्रुप को एक वित्तीय वर्ष में रुपए पांच करोड़ से अधिक का विज्ञापन न दिया जाए। यदि एक व्यक्ति एक से अधिक मीडिया ग्रुप का सदस्य या शेयर होल्डर है, तो उन सभी ग्रुपों/समूहों को एक ही ग्रुप माना जाए।

सुझावों पर अमल के लिए सतत् प्रतीक्षारत- केसरिया स्वर

केसरिया स्वर की सहायता के लिए, अधोलिखत खाता संख्या में अपना सहयोग प्रदान करें

AC No. Of Dinkar Darshan chantable trust,
Union Bank of India, rajajipuram branch Lucknow U.P.
536602010544552
IFSC code UBIN0553662
अन्य जानकारी के लिए संपर्क करें, 8960415670, 8423084190
स्वयमेव मृगेन्द्रता

आप कृपालु पाठकों का एक रूपये का आर्थिक सहयोग भी हमारे लिए संजीवनी के समान है। आप निम्नवत सहयोगी भी बन सकते हैं।

1. संरक्षक रूपये एक लाख
2. अभिभावक रूपये पचास हजार
3. आजीवन सदस्य रूपये पांच हजार

[illegible] TITLE CODE - [illegible]